

Q. 1. योग दर्शन में ईश्वर की अवधारणा क्या है और इसका क्या महत्व है ?

Ans. □ **योग दर्शन में ईश्वर की अवधारणा** : योग दर्शन, जिसे पतंजलि के योग सूत्र के माध्यम से विस्तृत किया गया है, भारतीय दर्शन की छह आस्तिक (वेदों को मानने वाली) प्रणालियों में से एक है। पतंजलि के योग सूत्र में योग के आठ अंगों (अष्टांग योग) का वर्णन है, जो आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति के मार्गदर्शन के लिए हैं। योग दर्शन में ईश्वर की अवधारणा महत्वपूर्ण है, जो साधकों को उच्चतम उद्देश्य (मोक्ष) की प्राप्ति में मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करती है।

□ **ईश्वर की परिभाषा** : पतंजलि के अनुसार, ईश्वर एक विशेष पुरुष (पुरुषविशेष) है, जो सभी क्लेशों, कर्मों, और उनके फलों से मुक्त है। इसे "क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः" (योग सूत्र 1.24) के रूप में वर्णित किया गया है। ईश्वर को शुद्ध चेतना, अनंत ज्ञान और सर्वोच्च सत्ता का प्रतीक माना जाता है। वह न तो जन्म लेता है और न ही मरता है वह शाश्वत और अपरिवर्तनीय है।

□ **ईश्वर की विशेषताएँ** :

1. **अनादि और अनंत** : ईश्वर अनादि (जिसका कोई प्रारंभ नहीं है) और अनंत (जिसका कोई अंत नहीं है) है। वह शाश्वत है और समय, स्थान, और कारण से परे है।
2. **सर्वज्ञ** : ईश्वर सर्वज्ञ (सर्वज्ञानी) है। वह समस्त ज्ञान का स्रोत है और सभी वस्तुओं और घटनाओं का ज्ञान रखता है।
3. **निर्दोष** : ईश्वर निर्दोष है और उसे किसी भी प्रकार के दोष या क्लेश का अनुभव नहीं होता। वह शुद्ध और पवित्र है।
4. **सर्वशक्तिमान** : ईश्वर सर्वशक्तिमान है और उसकी शक्ति असीमित है। वह सभी शक्तियों का स्रोत है और उसकी कृपा से ही सृष्टि का संचालन होता है।
5. **आदि गुरु** : ईश्वर आदि गुरु है। वह ज्ञान और योग के मार्ग का प्रथम उपदेशक है। पतंजलि के अनुसार, ईश्वर प्रणव (ॐ) के माध्यम से साधकों को ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

□ **ईश्वर का महत्व** : योग दर्शन में ईश्वर की अवधारणा और महत्व निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

1. **मार्गदर्शन और प्रेरणा** : ईश्वर साधकों को योग के मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करता है। वह साधकों को उनकी कठिनाइयों और संदेहों को दूर करने में सहायता करता है और आत्म-साक्षात्कार की दिशा में प्रेरित करता है।
2. **आध्यात्मिक शांति और स्थिरता** : ईश्वर की उपासना और ध्यान से साधकों को मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त होती है। यह उन्हें अपने मन और इंद्रियों को नियंत्रित करने में सहायता करता है और ध्यान की उच्चतम अवस्था (समाधि) में प्रवेश करने में मदद करता है।
3. **भक्ति और समर्पण** : योग दर्शन में ईश्वर की उपासना और भक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है। भक्ति और समर्पण के माध्यम से साधक अपने अहंकार को त्यागता है और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना रखता है। यह उसे आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष की दिशा में अग्रसर करता है।
4. **प्रणव (ॐ) का महत्व** : पतंजलि के अनुसार, ईश्वर प्रणव (ॐ) के माध्यम से साधकों को ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करता है। ॐ का जप और ध्यान साधकों को मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त करने में सहायता करता है और उन्हें ईश्वर के साथ एकत्व का अनुभव कराता है।
5. **कर्म और क्लेशों से मुक्ति** : ईश्वर की उपासना और ध्यान से साधक अपने कर्म और क्लेशों से मुक्त हो सकता है। यह उसे जीवन के दुखों और बंधनों से मुक्त करता है और आत्म-साक्षात्कार की दिशा में प्रेरित करता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी

सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग

शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय

बारा चकिया, पूर्वी चम्पारण

मो0-9608685335

Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com